फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें—
< http://faridabadmajdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद — 121001

नई सीरीज नम्बर 267 1/— सितम्बर 2010

बैठकें

चीन के ग्वांडोंग प्रान्त में वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनाने वाली **डेन्सो** फैक्ट्री के मजदूर। जुलाई-आरम्भ में एक दिन शिफ्ट आरम्भ होने पर काम करने लगने की बजाय मजदूर फैक्ट्री में घूमने लगे। आठ घण्टे घूमते रहे। प्रबन्धकों ने कार्य आरम्भ करने को कहा पर किसी मजदूर ने ऐसा नहीं किया। अगले दिन भी मजदूरों ने यह दोहराया। यूनियन ने मजदूरों से काम आरम्भ करने का अनुरोध बार-बार किया। मजदूरों ने काम शुरू नहीं किया। कोई नारेबाजी नहीं, कोई भाषण नहीं, कोई हिंसा नहीं। मजदूरों ने किसी को भी नेता पेश नहीं किया। मजदूरों ने अपनी बातें बताने के लिये कम्प्यूटर अथवा मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं किया क्योंकि सरकार ऐसे में कहने-बताने वाले का पता लगा सकती है। कागजों पर अपनी बातें लिख कर चिपकाई। हताश मैनेजमेन्ट ने यूनियन को चुनाव करवाने को कहा ताकि कोई तो हो जिससे सौदेबाजी की जा सके। मौन, शान्त मजदूरों ने किसी को नहीं चुना। कम्पनी ने तनखा बढाई। मजदूरों ने काम आरम्भ किया।

(जानकारी 'सोशलिस्ट स्टैन्डर्ड' — 52 Clapham High Street, London SW4 7UN, Britain — के सितम्बर 2010 अंक से।)

★ निवास से फैक्ट्री। दिल्ली, गुड़गाँव, फरीदाबाद में कारखानों में 12-16 घण्टे प्रतिदिन मजदूरों द्वारा काम करना आज सामान्य है। टूटे तन-मन के संग फैक्ट्री से निवास। अपनी दुर्दशा से ध्यान बँटाने-हटाने के लिये टी वी। बीच-बीच में खाली बैठना पड़ता है जो कि और भी बोझिल होता है। इस क्षेत्र में फैक्ट्री मजदूरों का यह दैनिक जीवन है।

★ इस सामान्य जीवन में भी झटके लगते रहते हैं। हाथ कटना, पिटाई, किये काम के पैसे नहीं देना, सहकर्मी की मृत्यु...... दैनिक जीवन में यह झटके "लफड़े" लगते हैं। दुर्दशा बढाती दैनिक जीवन की इन "रुकावटों" से पार पाना अपने बस से बाहर का लगता है।

★ दुर्दशा कम करने और "लफड़ों" से निकालने के लिये सरकार, सरकारी अधिकारियों, पार्टियों, नेताओं, यूनियनों, समाजसेवियों की तरफ देखते हैं। बार-बार के कटु-कड़वे अनुभवों के बावजूद मजबूरी में इनके पास जाते हैं। और, दुर्दशा तथा "लफड़े" बढते जा रहे हैं। यही ढर्रा रहा तो लक्षण तो निकट भविष्य में इनके और बढने के हैं।

★ क्या करें? कैसे करें? कुछ कर भी सकते हैं क्या ?.... मशीन हाँकती है, मशीन की गति दौड़ाती है, मशीन के पुर्जे बने हैं मजदूर। निजी असुरक्षा। सतत दमन। नौकरी-चाकरी में ताबेदारी। पैसों की दासता-पैसों की आवश्यकता। तन-मन-मस्तिष्क को थका कर चूर-चूर करता 12-16 घण्टे का बोझिल-उबाऊ काम। झूठ और फरेब के हर समय शिकार। गाली-मारपीट। भोजन और नींद अपर्याप्त तथा प्रकृति द्वारा प्रदत शरीर के समय-चक्र के विरुद्ध। जो चाहते हैं उसे-उन्हें समय नहीं दे पाते, उन में दिमाग नहीं लगा पाते, उन्हें नये ढँग से नहीं कर पाते..... यह सब मजदूरों का स्वयं में विश्वास नहीं रहने देते। असहायता की भावना-धारणा को यह स्थापित करते हैं। इसलिये मेरी-हमारी समस्यायें "कोई और" हल कर दे। परन्तु, इस से समाधान की बजाय समस्यायें-परेशानियाँ बढ रही हैं। इसलिये नये सिरे से देखना......

★ स्वयं करना। अपने अनुभवों से जो सीखा है उसे लागू करना। अपने समाधानों को जाँचने-परखने के लिये व्यवहार में उतारना। निजी गुणों का उपयोग करना। समस्या समाधान के अपने कौशल का इस्तेमाल करना। जिसे-जिन्हें "निजी" कहते हैं वहाँ सब मजदूर यह करते हैं। इसलिये बस इतना करना है कि अकेले-अकेले के संग मिल कर यह करें.....

★ "बस इतना" करेंगे कैसे? मिल कर, जुड़ कर स्वयं करना होगा कैसे? जुड़ने के लिये एक-दूसरे को जानना जरूरी है। जानने के लिये अनुभवों व विचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है। आदान-प्रदान के लिये मिलना जरूरी है। मिलने के लिये समय चाहिये। मिलने के लिये स्थान चाहिये। झुग्गी बस्तियों में, कापसहेड़ा-तेखण्ड-मुजेसर में जगह कहाँ है? आज 12-16 घण्टे काम के हालात में समय कहाँ है?

★ गाँवों की चौपालें-बैठकें पीछे छूट गई हैं। कारखानों के शहर फरीदाबाद की बात करें तो 1970-1995 के दौरान वाली खुली-खाली जगहें भी 8 घण्टे की ड्युटी की तरह आज गायब हो गई हैं। पान के खोखे, चाय की दुकानें, साइकिल मरम्मत-बाल काटने-दर्जी-गली के चिकित्सक की दुकान अब मिलने के अड्डे नहीं रहे। रेहड़ी-पटरी पर तथा गली-गली में दुकानों की भरमार स्थान लील गई हैं और व्यवसायिक दबाव के कारण आज दुकानदारों की कोशिश होती है कि ग्राहक बैठें नहीं, सौदा होते ही चलते बनें। ऐसे में मिलने-जुलने के लिये स्थान किराये पर लेना आवश्यक हो गया लगता है। निवास के आस-पास मिलने के लिये स्थान होने को 12-16 घण्टे की ड्युटी ने जरूरी भी बना दिया है। अस्सी-सौ मजदूरों द्वारा मिलने-जुलने के लिये गली में एक कमरा किराये पर लेना मुश्किल नहीं है। मन हो तब बैठना, घण्टा-आधा घण्टा समय हो तब बैठना, सुनना-कहना, बिना किसी दबाव के बैठना. .... जानने-जुड़ने-मिल कर करने के लिये यह कमरे, यह अड्डे, यह बैठकें नई राहें खोलने में सक्षम लगती हैं। आईये इन्हें जाँचें-परखें।◆

वीवा ग्लोबल

वीवा ग्लोबल गारमेन्ट्स मजदूर : "413 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में कभी पाइप खराब तो कभी पाइप फटने से शौचालयों में पानी नहीं। गर्मियों में पीने के लिये टंकी का गर्म पानी। तीसरी मंजिल पर काम करते मजदूर पानी पीने चौथी अथवा पहली मंजिल पर जायें। कार्यस्थल पर बहुत गर्मी के कारण मजदूरों का बेहोश होना। वार्षिक वेतन वृद्धि कम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से पर हस्ताक्षर दुगुनी दर पर करवाना। परेशानियाँ दूर करने के लिये स्थाई मजदूरों में सिलाई कारीगरों ने एक यूनियन से जुड़ने में पहल की। थोड़े-थोड़े करके एक ठेकेदार के जरिये रखे 250 मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया गया — इन मजदूरों में धागे काटती, मोती-सितारे लगाती, मरम्मत करती 150 महिला मजदूरों की तनखा मात्र 3000 रुपये थी। कम्पनी ने अप्रैल से ओवर टाइम बन्द कर दिया। मैनेजमेन्ट काम फैक्ट्री से बाहर करवाने लगी। स्थाई सिलाई कारीगरों को बहुत कम काम देने लगे और आरोप लगाया कि मजदूर काम नहीं करते। एतराज..... 20 अगस्त को यूनियन के साथ कुछ मजदूर श्रम अधिकारी के पास गये तो वहाँ मैनेजमेन्ट का एक प्रतिनिधि बस एक पत्र ले कर पहुँचा। सोमवार, 23 अगस्त को ड्युटी पर पहुँचे तो 14 को निलम्बित बता कर गेट पर रोक दिया। तीन की जगह 7 गार्ड थे और धमकाने के लिये 8 अन्य लोग भी थे। बारिश में भीगते 120

(बाकी पेज तीन पर)

पहली जुलाई 2010 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4348 रुपये (8 घण्टे के 167 रुपये); अर्ध-कुशल अ 4478 रुपये (8 घण्टे के 172 रुपये); अर्ध-कुशल ब 4608 रुपये (8 घण्टे के 177 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4738 रुपये (8 घण्टे के 182 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4868 रुपये (8 घण्टे के 187 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4998 रुपये (8 घण्टे के 192 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है। इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये कुछ पते : 1. श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ 2. श्रम सचिव, हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ।

फरीदाबाद में मजदूर

एस पी एल मजदूर : "प्लॉट 134 सैक्टर-24 स्थित कपड़ा क्षेत्र की फैक्ट्री में डेढ-दो हजार मजदूरों की सुबह 9½ से रात 1 की शिफ्ट है — रविवार को साँय 6 बजे छोड़ देते हैं। अठानवे प्रतिशत मजदूरों को ठेकेदारों के जरिये रखा है, तनखा 3000-4000 रुपये, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सैक्टर-58 में प्लॉट 131-132 में एस पी एल की नई फैक्ट्री में एक हजार से ज्यादा मजदूर हैं और वहाँ भी ऐसी ही स्थिति है।"

विंग्स ऑटोमोबाइल्स श्रमिक : "आई-35 डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 25 स्थाई मजदूर और ठेकेदार के जरिये रखे 325 वरकर **हीरो होण्डा, बजाज, यामाहा, होण्डा, हीरो पुक, काइनेटिक** दुपहिया वाहनों के इग्निशन कॉयल बनाने के संग-संग **मारुति सुजुकी** कारों के पुर्जे बनाते हैं। कहने को 8½ घण्टे की ड्युटी है पर महीने में 200 घण्टे तक ओवर टाइम, जबरन रोकते हैं और भुगतान सिंगल रेट से। लगातार 20 घण्टे से ज्यादा रोकते हैं तब रोटी के लिये 20 रुपये देते हैं। हर समय हाथ कटने का खतरा — 12 पावर प्रेस और 10 मोल्डिंग मशीनों पर निर्धारित उत्पादन ज्यादा, मशीन खराब है तब भी चलाओ, एक पीस भी रिजैक्ट तो एक घण्टे के पैसे काट लेते हैं, गाली देते हैं, धक्का-मुक्की भी। एक-दो-तीन उँगली कटती रहती हैं। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते। प्रायवेट में उपचार के बाद निकाल देते हैं। यहीं पर कम्पनी की सहायक **एडोन** में 5 स्थाई मजदूर और ठेकेदार के जरिये रखे 70 वरकर **हीरो होण्डा, बजाज, यामाहा** दुपहियों तथा कारों व ट्रैक्टरों के हॉर्न बनाते हैं। एडोन में 5 पावर प्रेस हैं और इधर एक मजदूर को भर्ती करते ही लगातार 26 घण्टे काम करते हो गये थे तब उसकी दो उँगली कट गई। शौचालय बहुत गन्दे — पानी नहीं रहता। ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को जुलाई की तनखा 14 अगस्त को दी।"

कुंज बिहारी टैक्सटाइल्स कामगार: "प्लॉट 90 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 200 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 400 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 250 मजदूरों की ही। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के स्थाई मजदूरों को 6500-7000 रुपये और ठेकेदारों के जरिये रखों को 4200-5500 रुपये। जबकि, पी.एफ. में स्थाई मजदूरों को 8 घण्टे पर 26 दिन के 5500-5600 रुपये दिखाते हैं। स्थाई मजदूरों के 4 वर्ष होते ही परेशानियाँ बढा देते हैं — मशीन चलाने की जगह गाड़ी में माल लादने में लगा देना, मामूली देरी पर एक घण्टे के पैसे काटना, माल खराब कर दिया के आरोप, गाली देना.... बस का नहीं है तो छोड़ दो। पाँच वर्ष पूरे नहीं होने देते। हिसाब नहीं देते — पहले ही कोरे कागज पर हस्ताक्षर करवा कर रखते हैं।"

जयओम ऑटो इंजिनियरिंग वरकर: "17/6 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की एक शिफ्ट में 150 मजदूर **हीरो होण्डा, यामाहा** दुपहियों तथा **एस्कोर्ट्स** ट्रैक्टरों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे 24 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 3800 और कारीगरों की 4000-5000 रुपये। चार ठेकेदारों के जरिये रखे 125 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 3300 और कारीगरों की 3840 रुपये। तीन घण्टों को ओवर टाइम कहते हैं, पैसे सिंगल रेट से।"

पूनम फुटवियर श्रमिक: "प्लॉट 14 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में दस ठेकेदारों के जरिये रखे 80 मजदूरों में 11 महिला मजदूरों की तनखा 2200-2400 रुपये, पुरुष हैल्परों की 3000-3200 तथा कारीगरों की 4000 रुपये। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे 7 हैल्परों की तनखा 3200-3500 रुपये। शिफ्ट 10½ घण्टे की, 2 घण्टे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ **बाटा** की चप्पलों के फीते तथा टैनिस शूज बनते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं। रबड़ का गन्दा काम है, बहुत बदबू रहती है। पीने का पानी खराब। शौचालय गन्दे।"

हैदराबाद इन्डस्ट्रीज कामगार : "सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में एस्बेसटोस की चद्दरें बनाने का भारी काम है। अधिकतर मजदूर 9 ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। माल उतारने-चढाने का काम पीस रेट से है पर दिखाते मासिक तनखा पर हैं। ड्युटी 8 घण्टे की दिखाते हैं जबकि हर रोज 12-15 घण्टे काम करना पड़ता है। अप्रैल में पीस रेट दस प्रतिशत बढाया पर अगस्त तक लागू नहीं किया। इस पर मजदूर 8 घण्टे काम करने लगे तो कम्पनी ने अन्य वरकर भी माल उतारने-चढाने में लगा दिये। अब दस-बीस वर्ष से लोडिंग-अनलोडिंग कर रहे मजदूरों को कभी 11 बजे, कभी 1 बजे तो कभी रात को बुलाने लगे हैं।"

ब्राइट ब्रदर्स वरकर : "प्लॉट 15-16 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 30 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 225 वरकर तीन शिफ्टों में **व्हर्लपूल** का प्लास्टिक का कार्य करते हैं। आठ घण्टे बाद जबरन 8 घण्टे रोक लेते हैं, महीने में 80-120 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर छोड़ने पर फण्ड के पैसों में लफड़ा रहता है। पी.एफ. जमा नहीं करते — 18 महीनों के फण्ड के लिये दो बार फार्म दिया और डेढ वर्ष से चक्कर काट रहा हूँ।"

आई एम टी... (पेज तीन का शेष)

किसी के पैसे नहीं बढाये। कुल मिला कर 300 मजदूरों को लाभ हुआ, 900 मजदूरों को कोई फायदा नहीं हुआ। हमें तो लगता है कि हम ने जो 900 रुपये दिये उसका नुकसान हुआ, अब हम में कोई चन्दा नहीं देता। जून में विवाह आदि के लिये छुट्टी माँगी तो कम्पनी-ठेकेदारों ने इनकार कर दिया और यूनियन प्रधान बोला कि वह कुछ नहीं कर सकता। इस्तीफे दे कर 70-80 मजदूर गाँव गये और ठेकेदार उनकी छुट्टियों के पैसे भी खा गये — वर्ष में 18 सवेतन छुट्टी और बोनस में एक तनखा का प्रावधान पहले से हैं। अब नई भर्ती वालों को 6 महीने पर ब्रेक दे रहे हैं।" **होण्डा श्रमिक :** "फैक्ट्री में मजदूरों के बीच कदम-कदम पर भेदभाव है।.....

महीने में एक बार छापते हैं, 9000 प्रतियाँ निःशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

वर्कशॉप वरकर

(पेज चार का शेष)

हैं कि पट्टी से जल्दी ठीक नहीं होगा, इस पर पेशाब कर लो। दवा चल रही होती है तब भी वर्कशॉप में आ कर कुछ न कुछ काम करो।"

अमन इन्टरप्राइजेज श्रमिक : "सराय मोहल्ला, मुजेसर स्थित वर्कशॉप में दो सरफेस ग्राइन्डर, सिलिन्ड्रीकल ग्राइन्डर, इन्टरनल ग्राइन्डर, लेथ मशीन, एम एन टी आर, टूल ग्राइन्डर, ड्रिल, दो जनरेटर के प्रयोग से 4 मजदूर और वर्कशॉप वाला तथा उसका भतीजा फैक्ट्रियों के लिये डाईयाँ बनाते हैं। तनखा 2400-5000 रुपये। शौचालय नहीं है। सरफेस ग्राइन्डर तथा जनरेटरों के कारण बहुत ज्यादा प्रदूषण।"

लक्ष्मण सिंह मित्तल इन्डस्ट्रीज कामगार: "डबुआ में सर्वोदय स्कूल के पास स्थित वर्कशॉप में 25 मजदूर 12 पावर प्रेसों, सरफेस ग्राइन्डर, बंडी ड्रिल द्वारा **व्हर्लपूल** का माल बनाते हैं। सुबह 8½ से रात 9 की ड्युटी है। वर्कशॉप वाला सब काम जानता है, सैटिंग कर देता है और उसका बेटा बाहर का काम देखता है। सीनियर डाई फिटर है, काम करता नहीं, बता देता है और उसकी तनखा 5000 रुपये से ज्यादा है। हैल्पर-ऑपरेटर की तनखा 3000-3200-3500 रुपये।"

बी.एस. इन्टरप्राइजेज वरकर : "सराय मोहल्ला, मुजेसर स्थित वर्कशॉप में लेथ, सरफेस ग्राइन्डर, ड्रिल, जनरेटर के जरिये 3 मजदूर फैक्ट्रियों का जॉब वर्क करते हैं। तनखा 3500-4500 रुपये और देरी से, 15-20 तारीख को।"

गुड़गाँव में मजदूर

मैक एक्सपोर्ट मजदूर : "143 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट, रात 1½ बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को जबरन ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सिलाई कारीगर को 8 घण्टे के 160-165 रुपये। हैल्परों की तनखा 3500-3800 रुपये। इस्त्री करने वाले पीस रेट पर और ऐसे जो बनते हैं उन में से हर महीने गड़बड़ कर 1000-2000 रुपये खा जाते हैं — यह आरोप लगा कर कि सँख्या बढा कर बताई थी। ई.एस.आई. व पी.एफ. 5-6 की ही हैं जबकि फैक्ट्री में 400 मजदूर हैं। जनरल मैनेजर गाली देता है, 9 अगस्त को सुपरवाइजर ने एक सिलाई कारीगर से मारपीट की।"

भूरजी सुपरटैक श्रमिक : "272 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों को जुलाई की तनखा 20 अगस्त को दी। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को जुलाई की आधी तनखा 23 अगस्त को दी और बाकी आज, 28 अगस्त तक नहीं दी है। तनखा से 554 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के काटते हैं। ई.एस.आई कार्ड देते ही नहीं अथवा वर्षों तक कच्चे कार्ड बदलते रहते हैं। छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते। फ्रिज है पर पानी नहीं रहता — दूसरी कम्पनी से ला कर पीते हैं। शौचालय में पानी नहीं।"

कैलाश रिबन कामगार : "403 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 350 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं, रविवार को भी ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। स्थाई मजदूर 100 हैं और उनकी ही ई.एस.आई. व पी. एफ. हैं। कैजुअल वरकरों में हैल्परों की तनखा 3000 और कारीगरों की 3500-4000 रुपये।"

आकृति वरकर : "410 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 11 तक काम। ओवर टाइम सिंगल रेट से। भर्ती ठेकेदारों के जरिये करते हैं। जुलाई में 5 से 17 तारीख तक काम किया और कार्ड के लिये जोर दिया तो निकाल दिया। किये काम के पैसे लेने 6 अगस्त को फैक्ट्री गया तो झगड़े पर उतारू हो गये, बोले कार्ड नहीं बना इसलिये पैसे नहीं देंगे। अपने जैसे 2-3 और मजदूरों को पाया। आठ-दस दिन काम करवा कर निकाल देते हैं और उन दिनों के पैसे नहीं देते, दादागिरी करते हैं।"

सुरक्षा कर्मी : "अनमोल टावर, डुण्डाहेड़ा में कार्यालय वाली **स्विफ्ट सेक्युरिटी** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक अवकाश नहीं, कोई छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 4900 रुपये देते हैं जबकि हस्ताक्षर 8 घण्टे पर 26 दिन के 4214 रुपये पर करवाते हैं और कम्पनियों से प्रति गार्ड 7000 रुपये लेते हैं। प्रतिमाह ई.एस.आई. के 50 रुपये और पी.एफ. के 170 रुपये पता नहीं किस आधार पर काटते हैं। वर्दी लो या मत लो, हर महीने वर्दी के 170 रुपये काटते हैं। जुलाई की तनखा 16 अगस्त को दी।"

ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर : "206 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में आई टी आई किये 25 को ट्रेनी रखा। पाँच वर्ष बाद भी ट्रेनी ही हैं, स्थाई नहीं किया। ऐसे में लोग छोड़ गये और अब 8 ही बचे हैं। ट्रेनो को सवेतन छुट्टी नहीं, वार्षिक बोनस नहीं, वर्दी नहीं, आने-जाने के लिये कम्पनी बस में बैठने की अनुमति नहीं, दिवाली पर उपहार नहीं। ट्रेनी को कैजुअल वरकरों के साथ जुलाई की तनखा 22 अगस्त को दी।"

नागिया एसोसियेट्स कामगार : "345 उद्योग विहार फेज-2 को सूचना प्रौद्योगिकी वाली आई-ट्रस्ट कम्पनी को किराये पर दिया है। सुरक्षा, सफाई, रखरखाव नागिया कम्पनी करती है और मजदूरों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3500-4214 रुपये देते हैं। आठ महीने से कह रहे हैं कि अगले महीने से पैसे बढा देंगे पर बढाते नहीं।"

स्पार्क वरकर : "166 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 की शिफ्ट, रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को भी काम। ओवर टाइम सिंगल रेट से और ऐसे जो बनते हैं उनमें से 200 रुपये हर महीने खा जाते हैं, एतराज पर गाली देते हैं। जुलाई की तनखा 20 अगस्त को दी और जुलाई में किये ओवर टाइम के पैसे आज 28 अगस्त तक नहीं दिये हैं। करीब एक हजार मजदूर हैं, 2-4 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। पीने का पानी ठीक नहीं। शौचालय गन्दे, हैं ही मात्र दो। साहब गाली देते हैं।"

ई ई एल, 401-402 फेज-3, ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूरों की तनखा 3200-4214 रुपये, जबरन ओवर टाइम और पैसे सिंगल रेट से, वर्दी नहीं और जूतों के 300 रुपये काटते हैं; **सिंह एक्सपोर्ट**, 211 फेज-1, हैल्पर तनखा 3500 रुपये, ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम सिंगल रेट से, जुलाई की तनखा 18 अगस्त को दी; **मार्स इन्टरप्राइज**, 370 फेज-3, बोर्ड पर ओवर टाइम दुगुनी दर से पर व्यवहार में सिंगल रेट से; **एम डी एच मसाले**, 216 फेज-1, सब को अकुशल श्रमिक ग्रेड, ओवर टाइम सिंगल रेट; **स्मृति एपरेल्स**, 156 फेज-1, ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी. एफ. नम्बर नहीं, छोड़ने पर 10-15 दिन किये काम के पैसे नहीं;....

आई एम टी मानेसर

ओमैक्स ऑटो मजदूर : "प्लॉट 5 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 70 स्थाई मजदूर, 80 कैजुअल वरकर और सात ठेकेदारों के जरिये रखे एक हजार से ज्यादा मजदूर **होण्डा, हीरो होण्डा, सुजुकी** दुपहिया वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। सुबह 7 से साँय 5½ तथा साँय 5½ से अगली सुबह 7 तक की दो शिफ्ट हैं। पीस रेट है इसलिये जल्दी करके भी निकल लेते हैं। रात में 2 बजे 200 मजदूर निकलते हैं, कुछ मजदूर रात 3½ निकलते हैं ..... खोह, मानेसर, बास गाँव, नाहरपुर, रामपुरा गाँवों में कमरों तक जाने में बहुत दिक्कत होती है। स्थाई मजदूरों ने यूनियन बनाने के लिये कदम उठाये। सब मजदूरों ने तीन बार 300-300 रुपये दिये। अगस्त 03 से बनी पेन्ट शॉप में मजदूर कम्पनी ने स्वयं रखे थे। सितम्बर 09 में पेन्ट शॉप ठेकेदार को सौंप दी — कुछ मजदूर नौकरी छोड़ गये, कुछ वैल्डिंग में चले गये, कुछ पेन्ट शॉप में ही ठेकेदार के जरिये रखे वरकर बन गये। नवम्बर 09 में यूनियन बनी पर झण्डा नहीं लगा है। चोरी का आरोप लगा कर कम्पनी ने यूनियन प्रधान को बाहर किया। इस पर जनवरी में दो दिन फैक्ट्री में काम बन्द रखा — अन्दर वाले मजदूर अन्दर रहे और बाहर वाले बाहर रहे। प्रधान को अन्दर लेने; स्थाई के 6000, कैजुअल के 4000, ठेकेदारों के जरिये रखों के 3000 रुपये बढाने; पहले वर्ष 40, दूसरे में 20, तीसरे में 10 को स्थाई करने; आने-जाने के लिये बसें; कैन्टीन में सुधार.... माँगें थी। प्रधान को ड्युटी पर ले लिया और स्थाई मजदूरों की हर महीने तनखा बढानी आरम्भ की, अगस्त तक 2400 रुपये बढे। स्थाई किसी को नहीं किया है। बसें नहीं लगाई। पाँच वर्ष पुराने ठेकेदारों के जरिये रखें मजदूरों के 200 रुपये अतिरिक्त बढाये। बाकी **(बाकी पेज दो पर)**

वीवा ग्लोबल.....(पेज एक का शेष)

मजदूर बाहर खड़े रहे और 14 को अन्दर जाने देने के लिये बहसें, धक्का-मुक्की। कम्पनी ने कारों में हाकी वाले बुला लिये। पुरुष व महिला मजदूरों को हाकियाँ मार-मार कर खदेड़ा। एक मजदूर को उठा कर भी ले गये। यूनियन कार्यालय गये और वहाँ से श्रम विभाग। श्रम अधिकारी फैक्ट्री आया पर कुछ नहीं हुआ..... 23 अगस्त से 120 मजदूर फैक्ट्री के बाहर धरने पर बैठे हैं और 50 अन्दर काम कर रहे हैं। उठा ले गये मजदूर की रिहाई के लिये 25 अगस्त को यूनियन प्रधान और एक सिलाई कारीगर भूख हड़ताल पर बैठे — 26 को ढाई बजे भूख हड़ताल समाप्त की। घायल अवस्था में मजदूर को फैक्ट्री से 500 गज दूर छोड़ गये थे। पुलिस ने इस मामले में 27 अगस्त को 3 लोग गिरफ्तार किये। फैक्ट्री में **मार्क एण्ड स्पैन्सर** का माल बनता है। बायर की प्रतिनिधि बंगलुरू से आई। पूछताछ की और होटल में बुला कर यूनियन तथा मैनेजमेन्ट प्रतिनिधि के साथ मीटिंग की। बायर प्रतिनिधि यह कह कर बंगलुरू चली गई कि 28 अगस्त को 11 बजे मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच वार्ता के बाद समझौता हो जायेगा। पर मैनेजमेन्ट ने आज 28 अगस्त को 12 बजे तक शक्ल नहीं दिखाई है।" (**छात्र :** "2 सितम्बर को श्रम आयुक्त वीवा ग्लोबल फैक्ट्री पहुँचा। दो घण्टे मैनेजमेन्ट के साथ रहा। बाहर निकल कर श्रम आयुक्त मजदूरों से बोला कि अन्दर जा कर काम करो, समझौता हो जायेगा। तब श्रम आयुक्त को मजदूर खरी-खरी सुनाने लगे तो यूनियन नेता श्रम आयुक्त के पक्ष में बोला। चौदह की बजाय 6 को बाहर छोड़ कर अन्दर जाने की बातें....")

दिल्ली में मजदूर

1 फरवरी 2010 से दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं अकुशल श्रमिक 5272 रुपये (8 घण्टे के 203 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 5850 रुपये (8 घण्टे के 225 रुपये); कुशल श्रमिक 6448 रुपये (8 घण्टे के 248 रुपये) /स्टाफ में स्नातक एवं अधिक: 7020 रुपये (8 घण्टे के 270 रुपये)। पच्चीस पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता: श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली–110054।

गोविन्द एक्सपोर्ट मजदूर : "ए-189 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी द्वारा स्वयं रखे सिलाई कारीगरों की तनखा 5200 तथा हैल्परों 4200 रुपये। ठेकेदार के जरिये रखे धागे काटने वाले मजदूरों की तनखा 2700 तथा मोती-सितारे लगाने वालों की 3200 रुपये। कुल 150 मजदूर हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं। सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है और रात 1 बजे तक रोक लेते हैं, महिला मजदूरों को भी रात 1 तक। आजकल काम मन्दा है अन्यथा महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। सुपरवाइजर और मैनेजर गाली देते हैं। पीने का जल ठीक नहीं है।"

सिद्धार्थ एक्सपोर्ट श्रमिक : "बी-6/9 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है और महीने में दस रोज रात 2 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कम्पनी ने स्वयं 50 मजदूर तथा ठेकेदार के जरिये 100 रखे हैं — किसी मजदूर की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती को 8 घण्टे के 130 से 170 रुपये। ठेकेदार के जरिये रखों में धागे काटने व मोती-सितारे वालों को 8 घण्टे के 115 और सिलाई कारीगरों को 180 रुपये।"

किरण उद्योग कामगार : "बी-182 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में डेन्सो, होण्डा, मारुति सुजुकी तथा बसों-ट्रकों के हिस्से-पुर्जे दिन की 11½ घण्टे और रात की 12 घण्टे की शिफ्टों में बनते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी बहुत कम — 12½, 13½.... रुपये प्रतिघण्टा। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती 40 मजदूरों की तनखा 4500-7000 रुपये। तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 70 मजदूरों की तनखा 3000-4500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

इनस्टाइल वरकर : "एफ-34/5 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कम्प्युटर इम्ब्राइड्री का कार्य होता है। हैल्परों को 12 घण्टे प्रतिदिन पर 26 दिन के 3000 रुपये और ऑपरेटरों व फ्रेमरों को 4500-6000 रुपये। फैक्ट्री तीसों दिन चलती है, 4 रोज के 12-12 घण्टे के पैसे सिंगल रेट से।"

***कढाई कारीगर :** "ओखला औद्योगिक क्षेत्र में मैं 18 कम्प्युटर इम्ब्राइड्री फैक्ट्रियों में काम कर चुका हूँ। दो फैक्ट्रियों में ही दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन दिया जाता है।"*

कौशिक एपरेल्स मजदूर : "सी-38 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 11 की शिफ्ट में 200 मजदूर स्वैटर बनाते हैं। स्वैटर बनाने वाली 60 मशीनों के ऑपरेटर तथा 12 सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं। धागे काटने वाली 10 महिला मजदूरों की तनखा 2600 रुपये तथा ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।" **एम ट्रो श्रमिक :** "सी-78 डी डी ए शेड्स ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में प्लास्टिक के सामान बनते हैं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 4600 रुपये और मशीनें चलाने वालों को 4900-5800 रुपये।"

वर्कशॉप वरकर

फरीदाबाद कारखानों का शहर है। फैक्ट्रियों के लिये सैक्टर तथा औद्योगिक क्षेत्र बने हैं और इधर इन्डस्ट्रीयल मॉडल टाउन के लिये भी जमीन का अधिग्रहण किया जा चुका है। फिर भी, बस्तियों में उल्लेखनीय मात्रा में औद्योगिक उत्पादन हो रहा है। आज गली-गली में वर्कशॉप हैं। फैक्ट्रियों से स्थाई मजदूरों की भारी छँटनी, कम्प्युट्रीकृत मशीनों की स्थापना से फैक्ट्रियों में फालतू हुई मशीनें, कार्य के उल्लेखनीय हिस्से को फैक्ट्रियों से बाहर करवाना, बेरोजगार कुशल मजदूरों की फौज और देहातों से आती लोगों की भीड़ ने निवास स्थानों पर 1990 से वर्कशॉपों की बाढ-सी ला दी। दो से दो सौ मजदूर इन वर्कशॉपों में फरीदाबाद-गुड़गाँव की बड़ी फैक्ट्रियों के लिये कार्य करते हैं। फरीदाबाद में वर्कशॉप वरकरों की सँख्या लाखों में ही कह सकते हैं और इन में से निन्यानवे प्रतिशत "अदृश्य" हैं, सरकारी दस्तावेजों में नहीं हैं। एक बार फिर वर्कशॉप वरकरों पर चर्चा का सिलसिला आरम्भ करने का हम प्रयास कर रहे हैं।

बॉक्सर इण्डिया मजदूर : "न्यू इन्डस्ट्रीयल एरिया के पास स्थित वर्कशॉप में 17 वरकर 6 पावर प्रेसों, 3 लेथ, एक ग्राइन्डर, एक रीमर पर **मारुति सुजुकी, आर के इन्डस्ट्रीज** के जरिये **जे सी बी**, दिल्ली की पार्टी, साईकिल क्लैम्प का कार्य करते हैं। हैल्पर की तनखा 2500-3000 रुपये और ऑपरेटर की 4000-4500 रुपये। सुबह 8½ से रात 8 की शिफ्ट, रात 12 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। अधिक समय काम, पावर प्रेसों का रखरखाव नहीं करते, हैल्पर को पावर प्रेस चलाने में लगा देते हैं इसलिये उँगली कटती रहती है। प्रायवेट में 2-4 दिन पट्टी करवा कर, 100-50 रुपये दे कर कहते **(बाकी पेज दो पर)**

स्पर्श बी पी ओ

स्पर्श बी पी ओ सर्विस मजदूर : "409 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित 12 मंजिला इमारत में कम्प्युटर व फोन वाले करीब 15 हजार वरकर तीन शिफ्टों में **बी एस एन एल, एयरटेल, एयरसेल, रिलायन्स कॉम, ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स** आदि का ग्राहक सेवा कार्य करते हैं। तनखा.... 8 घण्टे पर 26 दिन के 4800 रुपये। आठ घण्टे बाद एक-दो घण्टे रोकते ही रोकते हैं और उस समय के लिये कोई पैसे नहीं देते। लाने-ले जाने के लिये वाहनों पर कम्पनी व्यय नहीं करती, जो वरकर कैब इस्तेमाल करते हैं उनकी तनखा से हर महीने 1000 रुपये काटते हैं। पता नहीं किस हिसाब से कम्पनी ई.एस.आई. के 210 रुपये और पी.एफ. के 80 रुपये तनखा से काटती है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। भोजन अवकाश मात्र 15 मिनट का और दो बार चाय के लिये 5-5 मिनट। भीगे हैं तो भी काम करो। ग्राहक को इन्तजार नहीं करवा सकते..... ऐसे में वरकरों ने 31 मार्च 09 को काम बन्द किया, तीन दिन बन्द रखा। अन्दर जाते थे पर लॉग-इन ही नहीं करते थे। तब कम्पनी ने स्वयं 4-5 कम्प्युटर तोड़े और धमकी दी कि पुलिस केस बनवा कर जेल भेज देंगे। पकड़-पकड़ कर करीब दो हजार वरकरों को बाहर किया। वरकरों ने इस्तीफे लिख कर दिये थे पर कम्पनी ने लिये नहीं और भगौड़ा दिखा कर बाहर किया। दो वर्ष से अधिक समय से काम कर रहे थे.... फण्ड की राशि निकालने के लिये फार्म भर कर हस्ताक्षर करवाने कम्पनी गये तो फार्म फाड़ कर फेंक दिये और बोले कि भगौड़े हो इसलिये पी.एफ. के पैसे नहीं मिलेंगे। कम्पनी में सफाई तथा रखरखाव के लिये 200 मजदूर हाउस कीपिंग में हैं जिन्हें 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 4887 रुपये देते हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी के 195-196 उद्योग विहार फेज-1 वाले कार्यस्थल पर और भी ज्यादा वरकर **वोडाफोन, शुभ यात्रा, भारतीय जीवन बीमा निगम** आदि-आदि के लिये कार्य करते हैं।"

बाल भवन

सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय, भारत सरकार की परियोजना। शास्त्री भवन, नई दिल्ली में मुख्यालय। राज्य सरकारों के माध्यम से क्रियान्वित। राज्यपाल अध्यक्ष। उपायुक्त जिला इकाई का प्रेसीडेन्ट। जिला बाल कल्याण अधिकारी नियंत्रक। जिला बाल कल्याण परिषद तथा नशा मुक्ति केन्द्र प्रोजेक्ट के लिये केन्द्र सरकार वार्षिक अनुदान देती है। वर्ष 2007-08, 2008-09, 2009-10 की अनुदान राशि केन्द्र सरकार ने 31.8.2010 तक हरियाणा सरकार को नहीं भेजी है। राज्य सरकार ने कोई बजट प्रावधान नहीं किया और जिला बाल कल्याण परिषदों में ढाई वर्ष से कोई राशि नहीं पहुँची। इस कारण गुड़गाँव जिला बाल कल्याण परिषद में कार्यरत कर्मचारियों को सितम्बर 2008 से तनखा देना बन्द। फरीदाबाद जिला बाल कल्याण परिषद कर्मचारियों को अप्रैल 2009 से वेतन का भुगतान नहीं। तनखा माँगने पर "दे दी जायेगी" कहते रहे। और, फरीदाबाद बाल भवन कार्यालय पर केन्द्र व राज्य सरकारों ने 31.5.2010 को ताला लगवा दिया।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011